हरिशंकर राढ़ी को पढ़ते हुए

(समीक्षा)

समीक्षा लेखक
डॉ. विजेता साव
56/19, स्थिरपाड़ा रोड, 27 नंबर रेल गेट जगतदल, गीतांजलि अपार्टमेंट, फ्लैट - बी पोस्ट- काकीनाडा, जिला- 24 परगना उत्तर, (पश्चिम बंगाल) पिन - 743126
Email: *……..*

सारांश(Abstract):— पुस्तकों की भीड़ में, छपने-छपाने की होड़ में हर दिन न जाने कितनी किताबें आती और बस आती ही हैं। ना दिल के तार को झंकृत करती हैं और दिमाग के तार को जगाती हैं। बस, शब्दों की भीड़ में वह भी भीड़ का एक हिस्सा मात्र होती हैं, परंतु ऐसे भयावह, बाजारवादी माहौल में हरिशंकर राढ़ी की किताब, उनका व्यंग्य संग्रह 'युधिष्ठिर का कुत्ता' एक सुकून देता है। इस बात का सुकून कि आज भी लेखकीय ईमानदानी जीवित है, लेखक अपनी कलम की ताकत के साथ सचेत हैं, अपने युगीन की हलचलों के प्रति प्रतिबद्ध हैं। अपने समाज, अपने कर्तव्य। संबद्ध हैं उन सबके प्रति जो हैं, जो नहीं हैं और जो नहीं होकर भी हैं।

keywords : कुत्ता, कर्तव्य, व्यंग्य, प्रतिस्पर्धा, निजीकरण

पुस्तकों की भीड़ में, छपने-छपाने की होड़ में हर दिन न जाने कितनी किताबें आती और बस आती ही हैं। ना दिल के तार को झंकृत करती हैं और दिमाग के तार को जगाती हैं। बस, शब्दों की भीड़ में वह भी भीड़ का एक हिस्सा मात्र होती हैं, परंतु ऐसे भयावह, बाजारवादी माहौल में हरिशंकर राढ़ी की किताब, उनका व्यंग्य संग्रह 'युधिष्ठिर का कुत्ता' एक सुकून देता है। इस बात का सुकून कि आज भी लेखकीय ईमानदानी जीवित है, लेखक अपनी कलम की ताकत के साथ सचेत हैं, अपने युगीन की हलचलों के प्रति प्रतिबद्ध हैं। अपने समाज, अपने कर्तव्य। संबद्ध हैं उन सबके प्रति जो हैं, जो नहीं हैं और जो नहीं होकर भी हैं।
व्यंग्य अपने लिए असुंदर को ही चुनता है, ताकि हर जगह जो कुछ भी गलत है, अन्याययुक्त, शोषणयुक्त एवं गतिहीन है, उसका परिष्कार कर एक सुंदर समाज, सुंदर व्यवस्था को लागू किया जा सके। कवि मुक्तिबोध ने लिखा था, "दुनिया को साफ करने के लिए मेहतर चाहिए/वह मेहतर मैं नहीं बन पाता।"
एक कुशल व्यंग्यकार अपने अंतस की इसी पुकार को न सिर्फ सुनता है, बल्कि उसके अनुरूप स्वयं को ढालकर सफाई अभियान में मेहतर सदृश जुड़ जाता है। हरिशंकर राढ़ी के व्यंग्य संग्रह 'युधिष्ठिर का कुत्ता' में कुल 16 व्यंग्य हैं जो जीवन-जगत, समाज, राजनीति, लोकनीति, व्यवहारनीति, व्यवस्था इत्यादि पर बड़े पैनेपन से वार करते हैं। पहला व्यंग्य शीर्षक 'झूठमेव सत्यम्, शेष मिथ्या'। स्पष्ट है कि व्यंग्यकार जीवन से जूझते हुए बदलते मूल्यों से भलीभाँति रूबरू हो चुके हैं। उन्हें पता है कि झूठ का बाजार आज चारो ओर सजा है जिसकी चकाचौंध पर हर कोई फिदा है। तभी तो वह कहते हैं- "सच बोलना जहाँ वल्गैरिटी से अधिक कुछ नहीं होता है, वहीं झूठ बोलना एक कला है।"
इस संग्रह के प्रारंभ में ही वर्तमान समय की विसंगतियों पर, बदलते आदर्श एवं बदलती नैतिकता पर उनका कटु प्रहार देखने योग्य है। 'पुरस्कारहीनता का मलाल' इस संग्रह की एक और ऐसी रचना है जो आज के तथाकथित 'हाई रैंक' के कलाकारों एवं साहित्यकारों की पोल खोलती है। बड़ी बेबाकी एवं ईमानदारी से राढ़ी जी यह बताते हैं कि किस तरह पुरस्कारों की खरीद-बिक्री होती है। गुणवत्ता, प्रतिभा, योग्यता सब एक शब्दमात्र बनकर रह गए हैं। जो बिकने को तैयार हैं, तलवे सहलाने के लिए तत्पर हैं, वही पुरस्कारों की लिस्ट में सबसे ऊपर....। व्यंग्यकार का एक प्रश्न- "और आपको कभी कोई पुरस्कार मिला है जीवन में?" यह बता देता है कि किस तरह यह प्रश्न आज किसी की योग्यता का मापदंड बन गया है।
हरिशंकर राढ़ी का नाम ही व्यंग्य सम्राट हरिशंकर परसाई जी की याद दिलाता है, जो समय की नब्ज पकड़ना जानते थे और उसके साथ ही अपनी कलम चलाना भी। यही लगन, यही आबद्धता हरिशंकर राढ़ी जी में देखने को मिलती है। इस व्यंग्य संग्रह के अधिकतर व्यंग्य विचारों की उदात्तता, स्पष्टता और पक्षधरता को अभिव्यक्त करते हैं। आज जहाँ सोशल मीडिया पर हल्की कविताओं और शेरो-शायरी को कला, साहित्य और लेखन का प्लेटफॉर्म मानकर कुछ भी दिया जा रहा है, वहाँ 'युधिष्ठिर का कुत्ता' व्यंग्य संग्रह लेखन की, लेखक की गंभीरता हमारे सामने प्रस्तुत करता है। इसे पढ़कर यह कहा जा सकता है कि अभी भी सत्साहित्य एवं सद्लेखन का दौर गुजरा नहीं है। बात करती हूँ इस संग्रह के प्रतिनिधि व्यंग्य 'युधिष्ठिर का कुत्ता' पर। पौराणिक एवं मिथकीय कथा के माध्यम से राढ़ी जी ने प्रस्तुत व्यंग्य द्वारा जिस आधुनिक युगबोध को दर्शाया है, वह निश्चित रूप से विचारणीय एवं सराहनीय है। रोचकता को बरकरार रखते हुए जब वे आत्मकथा शैली में लिखते हैं- "मैं धर्मराज युधिष्ठिर का कुत्ता बोल रहा हूँ। पूरी सृष्टि और पूरे इतिहास का वही एक्सक्ल्यूसिव कुत्ता जो उनके साथ स्वर्ग गया था। अब मैं स्वर्ग में नहीं हूँ। धरती जैसे किसी ग्रह पर मैं वापस आ गया हूँ...।" प्रारंभ का यह परिचयात्मक कथन अंत तक पढ़ने की जिज्ञासा को बरकरार रखते हुए प्रेरित करता है कि वर्तमान समय के छद्मवेशियों की शिनाख्त करें। व्यंग्य की धार यहाँ देखने योग्य है- "अपनी जाति पर भौंकने में हमें बड़ा मज़ा आता है। कोई भी अपरिचित मिल जाए, हम अपने मुँह का निवाला छोड़कर उस पर भौंकने निकल पड़ते हैं।"
किसी भी पुस्तक, विशेषकर व्यंग्य संग्रह की विशेषता होती है पाठकों को बाँधे रखने की क्षमता या पठनीयता। इस संग्रह में शामिल सभी व्यंग्य पढ़ा ले जाने में समर्थ हैं। यदि पन्ने को जल्दी में भी पलटा जाए तो भी आँखें टिक जाती हैं कुछ ऐसी-ऐसी पंक्तियों पर जहाँ लगता है बस जिंदगी ही, अनुभव ही शब्दों का रूप लेकर सामने आ गए हों- "दोस्तों को आजमाते जाइए, दुश्मनों से प्यार होता जाएगा।" (मित्रदुख, पृष्ठ 103)
इस व्यंग्य संग्रह में आम आदमी की पीड़ा, टीस, कसमसाहट को महसूसा जा सकता है। यहाँ तक कि उपभोक्तावाद एवं बाजारवादी संस्कृति ने किस तरह से प्रतिस्पर्धा को जन्म देकर व्यक्ति को ही एक वस्तु में तब्दील कर दिया है। इस कटु यथार्थ को उनके व्यंग्य 'निजीकरण', 'उत्तर आधुनिक शिक्षा में मटुकवाद', 'भविष्य निर्माण' इत्यादि में देखा जा सकता है।

----------00--------

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हरिशंकर राढ़ी (year of publication) युधिष्ठिर का कुत्ता (व्यंग्य संग्रह) प्रकाशक : अयन प्रकाशन, 1/20 महरौली, नई दिल्ली -110030

----------00--------